मॉड्यूल – व्यावसायिक शिक्षा

भाग – 1

खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना

भाग – 2

आत्मनिर्भर बनने की पहल – हस्तकला

भाग – 3

बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा देकर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना

शीर्षक :
मध्यप्रदेश के विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की पहल

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार –

1. खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना।
2. व्यावसायिक शिक्षा द्वारा छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना।
3. बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा दे कर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार कार्य केन्द्रित शिक्षा का निहितार्थ है कि बच्चों में उनके परिवेश, प्राकृतिक - संसाधनों तथा जीविका से संबन्धित ज्ञान आधारों और कौशलों को विद्यालयी व्यवस्था में गरिमा और मजबूती में बदला जा सकता है ।

इस मॉड्यूल के माध्यम से हम चाहते हैं कि बच्चे स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ व्यावसायिक कौशलों को सीख कर जीविका के लिए तैयार हो सके तथा देश को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए । NCF 2005 के द्वारा यह प्रस्तावित किया गया है, कि हम चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के एक नए कार्यक्रम की ओर बढ़ें जिसे मिशन के रूप में तैयार किया जाए और लागू भी किया जाए। इसमें गांव के संकुल और ब्लॉक स्तर से लेकर उप जिला, जिला, नगर और महानगर तक व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण केंद्र और संस्थानों की स्थापना शामिल हो। व्यवसायिक शिक्षा को एक सम्मानजनक और चुनने योग्य पाठ्यक्रम के रूप में बनाना चाहिए, न कि वर्तमान की तरह अंतिम विकल्प के रूप में, जैसा कि अभी वह है। पाठ्यक्रम तथा संस्थान समावेशी हो, उसमें कौशलों का विकास न केवल आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से और ऐतिहासिक रूप से वंचितों बल्कि प्रतिकूल शारीरिक तथा मानसिक स्थिति वाले बच्चों के लिए भी सुनिश्चित किया जा सके ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी व्यावसायिक शिक्षा को प्रमुखता से स्थान दिया गया है, यह नीति 21 वी शताब्दी की पहली नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। **दुनिया की बदलती अर्थव्यवस्थाओं के कारण अधिक ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्था में अब हर एक व्यक्ति को किसी भी विशेष कौशल में विशिष्ट (निपुण) होने की आवश्यकता है–**

इस शिक्षा नीति के अनुसार पेशेवरों को तैयार करने से जुड़ी शिक्षा के लिए यह अनिवार्य है कि पाठ्यक्रम में नैतिकता और सार्वजनिक उद्देश्य के महत्व का समावेश हो और इसके साथ ही उस विषय विशेष की शिक्षा और व्यावहारिक अभ्यास की शिक्षा को भी शामिल किया जाए। उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक

है कि व्यावसायिक विकास से जुड़ी शिक्षा बाकी विषयों से कटी हुई या अलग-थलग ना रहे। अतः इस नीति के अनुसार भाषाओं में प्रवीणता के अलावा इन कौशलों में वैज्ञानिक स्वभाव,साक्ष्य आधारित सोच, रचनात्मकता और नवीनता, सौंदर्यशास्त्र और कला की भावना, स्वास्थ्य और पोषण, शारीरिक शिक्षा, फिटनेस, स्वास्थ्य और खेल, सहयोग और साक्षरता, कोडिंग और कंप्यूटेशनल चिंतन, नैतिक तर्क, मानव और संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान और अभ्यास,लिंग संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल और मूल्य, पर्यावरण संबंधी जागरूकता जिसमें पानी और संसाधन संरक्षण स्वच्छता और साफ-सफाई शामिल है।

आइये चिंतन करे कि

- किस प्रकार पाठ्यक्रम तथा संस्थान को समावेशी बनाया जा सकता है?
- व्यावसायिक विकास से जुड़ी शिक्षा बाकी विषयों से कटी हुई या अलग-थलग ना रहे इस हेतु आप एक नेतृत्व कर्ता के रूप में क्या-क्या कर सकते हैं ?

इसी कार्य को NCERT द्वारा निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत कला समेकित शिक्षा तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। कृषि शिक्षा और इससे संबंधी विषयों को पुनर्जीवित किया जाए जो कि स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान और उभरती हुई तकनीकों को समझ सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) में प्रत्येक विषय को व्यवसाय व रोजगार के लिए अधिक विस्तार पूर्वक निर्मित किया जाएगा। इसके अलावा भारतीय मांगों को राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बनाए गए व्यवसायियों के अंतर्राष्ट्रीय मानक वर्गीकरण के साथ जोड़ा जाएगा। यह फ्रेमवर्क पूर्ववर्ती शिक्षा की आवश्यकता के लिए आधार प्रदान करेगा। इसके माध्यम से ड्रॉप आउट हो चुके बच्चों के व्यावहारिक अनुभव को फ्रेमवर्क के प्राथमिक स्तर के साथ जोड़कर उन्हें पुनः औपचारिक प्रणाली से जोड़ा जाएगा। क्रेडिट आधारित यह फ्रेमवर्क छात्रों को सामान्य से व्यावसायिक शिक्षा तक जाने को सुगम बनाता है।

वर्तमान में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान(आईटीआई) में विभिन्न तकनीकी कोर्स में छात्रों को दक्ष किया जा रहा है जिसमें अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र की मांग रहती है। जैसे आटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोटर रिवाईंडिंग, कंप्यूटर हार्डवेयर एंड नेटवर्किंग, इलेक्ट्रिकल, स्टेनोग्राफी आदि। इसके अतिरिक्त तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास केंद्र विभाग के द्वारा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में विभिन्न शॉर्ट टर्म कोर्स के माध्यम से छात्रों को विभिन्न कौशलों जैसे ड्राइविंग, शेफ, टेलरिंग, गार्डनिंग, मिस्त्री, कारपेंटर, गारमेंट, जनरल हाउस कीपिंग में भी प्रशिक्षण दिया जाता है ।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का शुभारम्भ वर्ष 2015 में बेरोजगार युवाओं को रोजगार के प्रशिक्षण देने के लिए किया गया है । इस योजना के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं और उनकी योग्यतानुसार रोजगार भी प्रदान किया जा रहा है । PM KaushalVikasYojana 2021 का लाभ देश के 10वीं, 12वीं कक्षा ड्राप आउट (बीच में स्कूल छोड़ने वाले) युवा उठा सकते है। पीएमकेवीवाई के तहत प्रशिक्षण का निरीक्षण क्षेत्र कौशल परिषदों और संबंधित राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा हैं। इसके अंतर्गत 40 प्रकार के क्षेत्रों जैसे स्किलकौंसिल फॉर पर्सन विथ डिसेबिलिटी कोर्स, हॉस्पिटैलिटी तथा टूरिज्म कोर्स, टेक्सटाइल्स कोर्स, टेलीकॉम कोर्स, सिक्योरिटी सर्विस कोर्स, रबर कोर्स, रिटेल कोर्स, पावर इंडस्ट्री कोर्स में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है । विस्तृत जानकारी पीएमकेवीवाई की ओफिशियल वेब साइट http://pmkvyofficial.org/ पर देखी जा सकती है ।

इसी प्रकार राज्य शासन द्वारा मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना तथा मुख्यमंत्री कौशल्या योजना के अंतर्गत विभिन्न औद्योगिक एवं स्थानीय मांग पर आधारित रोजगार उन्मुखीप्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। इस योजना में 15 साल से अधिक उम्र के महिला या पुरुष भाग ले सकते हैं। एनएसक्यूएफ पाठ्यक्रम के लिए भारत सरकार द्वारा प्रशिक्षण की अवधि 15 दिवस से लेकर 9 महीने अर्थात लगभग 100 से 1200 घंटे तक की होती है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम निःशुल्क है, इसके क्रियान्वयन हेतु आईटीआई कौशल विकास केंद्र, पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज तथा उच्च शिक्षा विभाग के विद्यालयों का चयन किया गया है। इसमें अर्ध सरकारी संस्थाएं तथा कुछ निजी संस्थाएं भी सम्मिलित है इसके अंतर्गत स्टेनोग्राफी, शीट मेटल वर्कर, प्लास्टिक प्रोसेसिंग ऑपरेटर, फिजियोथैरेपी टेक्निशियन, सोलर टेक्नीशियन, पेंटर, मैकेनिक मोटर व्हीकल, मैकेनिक कंप्यूटर हार्डवेयर, मैकेनिक डीजल इंजन, प्लेट मेकर कम इंपोस्टर, ऑटो बॉडी रिपेयर, इंटीरियर डेकोरेशन एंड डिजाइनिंग, इसी प्रकार मुख्यमंत्री कौशल्या योजना सिर्फ महिलाओं के लिए है जिसमें ब्यूटीशियन, सिलाई बुनाई, कंप्यूटर से जुड़े हुए विभिन्न कोर्स, हेल्थ केयर सिक्योरिटी, टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी, बैंकिंग फाइनेंशियल सर्विसेज और इंश्योरेंस जैसे कई कोर्स सम्मिलित हैं।

हम इस मॉड्यूल में शाला स्तर से ही स्थानीय स्तर पर शुरू किए जाने वाले व्यावसायिक कौशलों पर चर्चा कर रहे है।

भाग - 1 :
खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार –

1. खिलौने के माध्यम से बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति बढ़ाना।
2. बच्चों में सकारात्मक व्यवहार एवं मूल्य विकसित करना।
3. बच्चों की कल्पना शक्ति,रचनात्मकता तथा कलात्मक कौशलों का विकास करना।

परिचय

खिलौने किसी भी समाज के विकास की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। पारंपरिक खिलौने परंपरा और संस्कृति की जानकारी देते हैं, बच्चे इन्हीं के माध्यम से कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण करते हैं। आधुनिक खिलौने सोच एवं चिंतनशीलता को नए आयाम देते हैं। खिलौने बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ ही व्यक्तित्व निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत ईसीसीई और एफएलएन 3.0 में मुख्य रूप से खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है- जैसे अक्षर, संख्या, गिनती, रंग, आकार, पर्यावरण के साथ-साथ, इंडोर एवं आउटडोर खेल ,पहेलियां और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक कठपुतली,संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य मानवीय संवेदना अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राथमिक शिक्षा के आरंभ से ही सीखने में नवाचार व शोध पर जोर देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य के साथ ही टोयकथान (Toycathon) का लक्ष्य देश भर के 33 करोड़ छात्रों को नवीन कौशलों से जोड़ने का है। शिक्षा मंत्रालय ने कहा है कि इससे शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से देश के सभी स्कूल कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के संकायों के लिए एक नया आयाम खुलेगा। केंद्रीय शिक्षामंत्री ने कहा कि यह पहली बार है जब स्कूली बच्चे विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों के लिए भी नवाचार, डिजाइन और संकल्पना वाले खिलौने बनाएं जाएंगे।

वर्तमान में खिलौना इंडस्ट्री का विश्व में विशाल मार्केट है। हमारे देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में खिलौने इंडस्ट्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है, इसलिए खिलौने व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखना तथा बढ़ावा देना हमारी महत्त्वपूर्ण जवाबदारी है।

> **'साहसे खलु श्रीःवसति' अर्थात साहस में ही श्री (समृद्धि) रहती है। ये Toys और Games हमारी मानसिक शक्ति, हमारी क्रिएटिविटी और हमारी अर्थव्यवस्था ऐसे अनेक पहलुओं को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन विषयों पर बात करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।**
>
> **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी**

चिंतन कीजिए कि

- क्या खिलौने हमारे जीवन में विशिष्ट स्थान रखते है ?
- जरा याद कीजिए आप बचपन में किस तरह के खिलौने बनाते थे, क्या आज बच्चे उस तरह के खिलौने बनाते है ?
- ऐसा क्यों है कि हम खिलौनों से दूर और तकनीक के पास होते जा रहे है ?

हमारे देश में प्राचीन समय से ही खिलौनों का समृद्धशाली इतिहास रहा है। भारतीय संस्कृति में सिंधु घाटी की सभ्यता से ही खेलों और खिलौनों का प्रचलन रहा है। बिना किसी खर्च के मिट्टी, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि के खिलौने उस समय बनाए जाते थे। जिनके माध्यम से छोटे से ही बच्चों को बहुत सी जानकारियाँ दी जाती थीं। खिलौनों में कई प्रकार की सामग्री प्रयुक्त होती है उदाहरण के लिए मिट्टी, लकड़ी, धातु, पुराने अनुपयोगी कपड़े, कागज की लुगदी पूर्ण धागे और फर वाले टेडी बियर आदि।

सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त टेराकोटा से बने खिलौने

हमारी प्राचीन सिंधु सभ्यता से प्राप्त खिलौनों में बैल, बंदर, तबले,पशु पक्षियों की आकृतियां, मिट्टी की बनी पहियेदार गाड़ी बहुत प्रसिद्ध है। हमारे खिलौनों का इतिहास 4000 वर्ष से भी अधिक समय हो जाने के बाद भी, आज अपनी पहचान बना हुआ है। जिस प्रकार हमारे देश के विभिन्न प्रांतों का कल्चर विविधता लिए हुए है, उसी प्रकार खिलौनों में भी विविधता मिलती है जो उनकी सुंदरता में चार चांद लगाते है।

भारत के जिस क्षेत्र में जो साधन उपलब्ध होता है उसके अनुसार स्थानीय स्तर पर खिलौने बनाए जाते हैं, विद्यालय में विद्यार्थी भी इन खिलौनों से स्थानीय संस्कृति, कला शिक्षा से जुड़ जाता है। बंगाल, गुजरात और बिहार में कई तरह की सजावट के साथ चित्र वाले मिट्टी के खिलौने होते हैं। उड़ीसा के लकड़ी के चित्रवाले खिलौने, आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा के कोंडापल्ली खिलौने प्रसिद्ध है, जिनमें वहां का पूरा परिचय मिलता है। जैसे- खाना पकाना, दूध से दही व मक्खन मथ कर निकालना, ढोल बजाते हुए स्थानीय वेशभूषा से सजे हुए स्त्री पुरुष एवं बच्चों की आकृतियों के खिलौने, कर्नाटक के चेनपल्लम में रुचिकर चमकदार रंगों के लकड़ी के रंग बिरंगे घास और बालू से भी खिलौने बनते हैं जिसमें बिहार की सीक्की घास को रंग कर प्रयोग किया जाता है, हाथों से मोड़कर आकार देकर, पशु और पक्षियों और विभिन्न प्रकार की आकृतियों को बनाया जाता है, पुराने कपड़े के टुकड़ों से गुड़िया सहित रंग-बिरंगे आकार के खिलौने जिन पर गोटा, चमक, कांच,रंगीन धागों की कढ़ाई आदि से सजाया जाता है। राजस्थान में विशिष्ट प्रकार की जीवन शैली में कठपुतलियों द्वारा नृत्य नाटक से कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदेश दिए जाते हैं। तमिलनाडु के तंजावुर की गुड़िया, नातूनग्राम की गुड़िया, बनारसी लकड़ी के खिलौने बहुत प्रसिद्ध हैं।

ये चित्र गूगल से साभार लिए गए है।

बच्चे इनके माध्यम से अपनी जिज्ञासा व कल्पना का प्रयोग कर स्वयं के लिए खिलौने बनाते हैं, आपस में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा द्वारा खिलौनों को नए-नए प्रकार से नया रूप प्रदान करते हैं। तकनीकी व आधुनिकता ने हमारे परंपरागत खिलौने के महत्व को कम जरूर किया है, लेकिन ऐसे खिलौने आज भी प्रचलन में हैं।

वर्तमान में आधुनिक तकनीक एवं डिजिटल माध्यम से खिलौनों में बहुत बदलाव आया है। बिजली से चलने वाले खिलौना कार, हवाई जहाज, बोलते हुए गुड्डे गुड़िया या जानवरों के प्रतिरूप आदि के साथ ये खिलौने स्मार्ट भी हो गए हैं। वही खिलौने बच्चों का विज्ञान और तकनीकी से सहज एवं सरलता से परिचय करवाते हैं। खिलौने विज्ञान,गणित के साथ अन्य विषयों के सिद्धांतों को स्पष्ट कर ,सीखने को रुचिकर बनाते हैं।

खिलौना निर्माण कार्यशाला, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, हतौड़ा, जिला-विदिशा।

भारत देश में आज खिलौने निर्माण का व्यापक असर असीम संभावना के साथ देखा जा रहा है। खिलौना उद्योग नई पीढ़ी के लिए नए द्वार खोल रहा है। मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इंदौर शहर के हातोद-देपालपुर क्लस्टर में खिलौना हब विकसित करने की योजना है, यहाँ पर पहला मेक इन इंडिया ब्रांड लॉन्च होना है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के लोग बहुत बेहतरीन तरीकों से इन खिलौना वस्तुओं का निर्माण करते हैं तथा इन निर्मित खिलौनों से स्वयं एवं अन्य लोगों को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

आइए करके देखे

- आप अपने क्षेत्र के स्थानीय स्तर पर बनाए जाने वाले खिलौनों की सूची नीचे दी गई तालिका के अनुसार बनाएं तथा
  I. उन्हें बनाने वाले कारीगरों को शाला में आमंत्रित करते हुए खिलौने किस प्रकार बनाए जाते है बच्चों से चर्चा कराये।
  II. खिलौनों का प्रदर्शन तथा कुछ खिलौने का बच्चों से निर्माण भी कराएं।

क्रमांक	खिलौनों का प्रकार	बनाने में लगने वाला सामान	लागत	विशेषता

आइए चिंतन करें कि

क्रमांक	कथन	सहमत	असहमत	तर्क
1.	खिलौने मात्र मनोरंजन का साधन होते हैं			
2.	माध्यमिक स्तर पर खिलौने बनाने से संबन्धित कौशलों का विकास संभव नहीं हैं			
3.	स्टार्ट अप से खिलौना उद्योग को बढ़ावा मिला है			
4.	खिलौने बनाने से संबन्धित कौशलों में दिव्यांग बच्चों को सम्मिलित कर सकते हैं			
5.	सिंधु सभ्यता से प्राप्त खिलौनों से हाथ की कारीगरी का पता चलता है			

आइए चिंतन करें कि

हम जानते हैं कि खिलौनों का संसार अत्यंत विस्तृत है। हमें अपने विद्यालयों में खिलौने बनाने की प्रक्रिया को सम्मिलित कर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर, शिक्षण को प्रभावी बनाकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक व सरल बनाना है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे अध्यापक कितनी कुशलता से विद्यार्थियों के साथ रुचिकर तरीके से खिलौने बनाते हैं। इसके द्वारा शैक्षिक सिद्धांतों व अवधारणाओं को बच्चों तक पहुंचाते हैं। बच्चे इन कार्यों को सीखते समय गणित, विज्ञान, भाषा, पर्यावरण, संस्कृति, नैतिकता, सृजन आदि को अपने तरीके से रुचि व प्रयोग सहित समझकर आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

भाग - 2 :
आत्मनिर्भर बनने की पहल - हस्तकला

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार

1. बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को अवसर देना
2. हस्तकला के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास/आत्मसम्मान की भावना विकसित करना।

परिचय

हस्तकला ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं जो उपयोगी होने के साथ-साथ सजाने के काम आता है। हस्तकला मुख्यतः हाथ से या छोटे औजारों की सहायता से बनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में हस्तकला का विशेष महत्व है, मशीनों के द्वारा बनाई गई वस्तुओं को हस्तकला के अंतर्गत नहीं लिया जाता है।

हस्तकला भारत की प्राचीन संस्कृति की विरासत और विशिष्टता है, भारतीय हस्तकला पूरे विश्व में अपनी एक अनूठी पहचान रखती है। शिक्षा के लक्ष्य के रूप में गांधी जी ने शिक्षा के दर्शन को प्रस्तुत करते हुए कहा है, 'शिक्षा से मेरा अर्थ मानव या बालक के शरीर, आत्मा और मन मस्तिष्क का बहुमुखी विकास करना है।' वे कहते थे कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली से है जो बालक एवं मनुष्य की समस्त प्रतिभाओं जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास भी सम्मिलित है, का विकास करें। गांधीजी का मानना था कि केवल पढ़ना-लिखना अपने आप में पूर्ण शिक्षा नहीं है। लोगों को अपने हाथ से काम करना सीखना चाहिए उन्हें विभिन्न निपुणताओं और कौशलों को सीख कर उसे कलात्मक तरीके से व्यक्त करना आना चाहिए।

समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी कमलादेवी चट्टोपाध्याय एक सामाजिक कार्यकर्ता, कला और साहित्य की समर्थक थी। कमलादेवी को भारत की आजादी के संग्राम में योगदान के लिए याद किया जाता है। वह भारतीय कला के क्षेत्र में नवजागरण लाने वाली गांधीवादी महिला थी। उन्हें सामाजिक सेवा के लिए पद्मभूषण और मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।प्रकृति की दीवानी कमला देवी ने ऑल इंडिया विमेन कॉन्फ्रेंस की स्थापना की तथा बहुत साहसिक रूप से राजनीति में काम किया, आपने नमक आंदोलन और असहयोग आंदोलन में भी हिस्सा लिया। आप पहली महिला थी जिन्होंने हाथकरघा और हस्तशिल्प को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई, बल्कि कमला देवी ने हाथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग को एक नई दिशा देते हुए महिलाओं की सामाजिक आर्थिक भागीदारी को सुनिश्चित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपके नाम से मार्च 2017 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला बुनकरों एवं शिल्पियों के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय पुरस्कार भी शुरू किया गया है। उनके विचारों से प्रेरित होकर हम भी शिक्षा को हस्तशिल्प से जोड़ सकते हैं और विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बना सकते है।

इसी तरह की एक पहल मध्यप्रदेश के इंदौर जिले की एक शिक्षिका द्वारा की गई है जिसे आप पढ़ सकते हैं।

केस स्टडी

एक ऐसे ही स्कूल में जो इंदौर जिले के महू विकास खंड की बस्ती मालवीय नगर में स्थित है। यहां के शासकीय माध्यमिक शाला की शिक्षिका श्रीमती इन्दिरा उईके से शाला अवलोकन के दौरान मुलाक़ात हुई। जब हमने यहां के बच्चों के पोर्टफोलियो देखे तो पाया कि उनमें बच्चों के द्वारा बहुत सुंदर डिजाइन बनाई गई थी, तो कुछ बच्चों ने पर्यावरण से एकत्र की गई अनुपयोगी चीजों से सजावट के सामान और शाला में काम आने वाली वस्तुओं का निर्माण किया है। जब शाला के बच्चों से पूछा कि आपने ये सब कैसे और कहां से सीखा? बच्चों ने बताया कि ये सब उनकी इन्दिरा मेडमजी ने सिखाया है।

इंदिरा मैडम से हमने चर्चा की तब उन्होंने हमें बच्चों की पोर्टफोलियो तथा उनके स्वयं के द्वारा बनाए गए हस्तकला से निर्मित वस्तुओं को दिखाया गया जो अवलोकन के लिए भी प्रस्तुत है, इन सामानों को देखने से यह पता चलता है कि हमारे पर्यावरण में जो भी वस्तुएं उपलब्ध है उनमें से कुछ भी अनुपयोगी नहीं होता है। अगर हम उनका सही तरीके से उपयोग करना सीख जाएं तो प्रत्येक वस्तु को उपयोगी बनाया जा सकता है।

जैसा कि शिक्षिका इंदिराजी द्वारा प्लास्टिक की खाली बोतल ड्राई फ्रूट्स के छिलके जिसमें अखरोट के छिलके, पिस्ता के छिलके, पेड़ों से गिरने वाले छाल, पीपल के पत्ते, केले के पत्ते, पाम का तना, मिट्टी, माचिस की तिलिया, झाड़ू की तिलिया, स्ट्रॉ, बची हुई अनुपयोगी राखियां, मोती, फलालेन अथवा सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा, थर्माकोल आदि से इन सभी सामानों को बहुत कम समय एवं कम श्रम में बनाया गया है। शाला में आने वाले प्रत्येक बच्चे की सहभागिता इन चीजों को बनाने में होती है। बच्चों से चर्चा के दौरान पता चला कि कुछ बच्चों को मिट्टी के साथ काम करना अच्छा लगता है, तो कुछ बच्चों को कागज के साथ, वहीं कुछ बच्चे थर्माकोल पर या प्लास्टिक की बोतल पर अपना काम करते हैं। अर्थात बच्चे अपनी रूचि के अनुसार हाथों से चीजों का निर्माण करते हैं तथा अपनी-अपनी पोर्टफोलियो में उसे लगाते भी है। इससे स्पष्ट होता है कि जहां शिक्षा के उद्देश्यों में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बहुत प्रमुखता से बात की गई है वह सब हस्तकला से बहुत आसानी से संभव है । बच्चे आनंद से अपनी रुचि के अनुसार कार्य करते हैं तथा एक दूसरे से सीखते हैं। जिससे परस्पर प्रेम, सहयोग की भावना का भी विकास होता है।

चर्चा के बिन्दु

- शिक्षिका श्रीमती इन्दिरा उइके द्वारा हस्तकला से संबन्धित कौन-कौन से कार्य किए गए?
- आपके क्षेत्र में हस्तकला से संबन्धित कौन कौन सी वस्तुएं बनाई जाती हैं?

समेकन

हस्तकला में हाथ की कारीगरी होती है। इसकी मुख्य विशेषता है कि यह कम लागत में तैयार हो जाती है। जहां हम मनुष्य के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो हस्तकला उसमें अपना प्रमुख स्थान रखती है, हस्तकला के माध्यम से मानव का भावनात्मक, शारीरिक, संवेगात्मक और आध्यात्मिक विकास तो होता ही है इसके साथ ही साथ इसकी मांसपेशियों के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः हस्तकला इन विशेषताओं के साथ-साथ समावेशी भी होती है। हम देखते हैं कि जो बच्चे दिव्यांग होते हैं वह भी हस्तकला के माध्यम से आत्मनिर्भर बन आत्मसम्मान से जीवन यापन करते हैं। हस्तकला के माध्यम से हमारी कई प्राचीन कलाएं आज भी जीवित हैं। जैसे कसीदाकारी, मीनाकारी, बाँस से बनाई वस्तुएं, क्ले आर्ट, मांड़ने (संजा), दीवारों पर चित्रकारी, धार्मिक सामाजिक कार्यों में उपयोग में आने वाली वस्तुएं जैसे दीयों पर मोती तथा मीनाकारी,वंदनवार, बटुए (छोटे पर्स), शृंगार का सामान आदि ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (सही/गलत) में दीजिए :-

प्रश्न 1 छात्रों के शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास में हस्तकला की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 2 हस्तकला से बनने वाली वस्तुओं में बहुत अधिक आर्थिक खर्च की आवश्यकता होती है ।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 3 पूरे भारत में हस्तकला से बनने वाली वस्तुओं में विविधता होती है।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 4 हाथ की कारीगरी से बनने वाले कार्यों में हम दिव्यांग बच्चों को सम्मिलित नहीं कर सकते हैं।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 5 कमलादेवी चट्टोपाध्याय के नाम से मार्च 2017 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला बुनकरों एवं शिल्पियों के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय पुरस्कार शुरू किया गया है।

उत्तर (सही/गलत)

भाग - 3 :
बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा दे कर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार

1. विधार्थियो में कार्य आधारित शिक्षा के महत्व की समझ विकसित करना।
2. विभिन्न व्यवसाय में कार्य करने वाले लोगों एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जानना।

परिचय

भारत में आधुनिक शिक्षा का मूल स्त्रोत गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था से रहा है। प्राचीन समय में विद्यार्थी गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करते थे तथा वहां पर संबंधित ज्ञान के साथ बहुत सी विधाएं एवं कौशल सीखते थे। भारत में व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 1 से 8 वीं तक कार्यानुभव या समाज उपयोगी उत्पादक कार्य एस. यू. पी. डब्ल्यू. (Socially Useful Productive Work) के माध्यम से शुरू की गई थी। समग्र शिक्षा के तहत यह कक्षा 6 से 8वीं तक पूर्व व्यवसायिक शिक्षा का एक स्वरूप है। जिसके अंतर्गत बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशलों से संबन्धित कार्य सिखाये जाते थे।

व्यावसायिक शिक्षा में विभिन्न प्रकार के कौशलों के विकास पर आधारित पाठ्यक्रम है जिनके द्वारा बच्चों को अध्यनगत रूचि के साथ आत्मनिर्भर बनाने हेतु आधार तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम में राजमिस्त्री, बढ़ई, नलसाज, ब्यूटीशियन, खिलौने बनाना, इलेक्ट्रिशियन, टेलरिंग आदि कोर्स हैं। हम इस मॉड्यूल में कार्य आधारित (ब्यूटीशियन) शिक्षा द्वारा माध्यमिक स्तर के बच्चों में समझ विकसित करने पर चर्चा करेगें।

सौन्दर्य सेवाओं का व्यापार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है, 2012-13 में भारत में कार्य आधारित बाजार का अनुमानित आंकड़ा 41.224 करोड़ रु. है, इसी प्रकार 2017-18 में यह आंकड़ा 50.370 करोड़ रु. है। कार्य आधारित शिक्षा में एक हिस्सा हेयर स्टाइल का है। अगले चरण में यह ब्राइडल मेकअप से जुड़ता है। इससे पहले वर्षो में केवल यह दुल्हन व दूल्हा के शादी के समय और उनके साथी रिश्तेदार इसी प्रकार की सेवा लेते थे, पर अब युवाओं में इसकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

आजकल के आधुनिक समाज में हम सभी अपने सौंदर्य को लेकर सजग हो गए है। ब्यूटी पार्लर ,सेलून,स्पा जाने वाले लोगों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जिससे सौंदर्य के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। एन. एस. डी. ए. की रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में 20 प्रतिशत की दर से सालाना बढ़ोतरी हो रही है। सौंदर्य सेवाओं का लाभ लेने हेतु प्रशिक्षित स्टॉफ की आवश्यकता है। इसमें महिला और पुरुष दोनों के रोजगार के अवसर बढ़े हैं। सौंदर्य क्षेत्र में आपकी रचनात्मकता एवं मौलिकता के लिए बहुत अधिक संभावना है।

आप अपने आस पास के क्षेत्र में कार्य आधारित कौशलों को पहचान कर उनकी सूची बनाए तथा विचार कीजिए कि क्या ये कौशल बच्चों को सिखाये जा सकते हैं?

शासकीय कन्या अहिल्या आश्रम क्रमांक 1 इंदौर की छात्राएं कार्य आधारित कौशल सीखते हुए।

आइए विचार करें

- हमारे जीवन में कार्य आधारित कौशलों का क्या महत्व है?
- क्या कार्य आधारित कौशलों को समावेशी बनाया जा सकता है ?

केस स्टडी

आइए, हम एक प्रयास से समझें। सुमन की बहन के विवाह पर सुमन अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी। विवाह के नजदीक आते -आते कई तैयारियां हो रही थीं जिसमें वस्त्र, आभूषण, द्वार रंग रोगन, दीवारों की सजावट, तोरण, मेंहदी, रंगोली आदि सभी तैयारियां जोरों पर थीं। विवाह के एक दिन पूर्व वह अपनी बहन के साथ ब्यूटी पार्लर गई तथा उसने विभिन्न तैयारियों के साथ दुल्हन की सजावट कार्य को होते देखा। अब कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में उठने लगे, फिर उससे रहा नहीं गया। तभी वह अपनी बहन से जिज्ञासावश प्रश्न करती है, 'दीदी यह सब क्या है?' उसकी दीदी कहती है- विवाह के समय सभी तैयारियों के साथ दुल्हन को सुन्दर और आकर्षक दिखने के लिए ब्यूटी टेक्नीशियन की आवश्यकता होती है तथा वह विभिन्न प्रकार के तकनीकी ज्ञान द्वारा दुल्हन को तैयार करती है। इसमें चेहरे पर फेशियल, आई ब्रो को आकार देना, केश सज्जा, केश डिजाइन आदि तकनीकी ज्ञान द्वारा सुन्दर मोहक बनाया जाता है, जिसे विवाह एवं अन्य अवसरों के योग्य बनाया जाता है।

सुमन यह सभी कार्य होते देखती है, फिर वह ब्यूटी टेक्नीशियन से प्रश्न करती है, कि 'मेम आपने यह शिक्षा कहां से प्राप्त की है?' तब टेक्नीशियन द्वारा बताया जाता है कि शिक्षा के साथ साथ यह कोर्स भी किया जा सकता है, इसके अंतर्गत विभिन्न कोर्स होते हैं। जैसे ब्यूटी पार्लर या सेलून, हेयर स्टाइल, उत्पादों की बिक्री, कायाकल्प

केंद्र, फिटनेस और स्लिमिंग, अल्टरनेटिव थेरेपी आदि भी आते हैं। हम अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार इस क्षेत्र में करियर चुनकर शिक्षा प्राप्त कर सकते है। सुमन पुनः प्रश्न करती है, 'यह कोर्स कौन सी कक्षा से प्रारम्भ होता है?' तब ब्यूटी टेक्नीशियन कहती है, 'विभिन्न चरणों में इस कोर्स की व्यवस्था है। यह सभी जानकारी अपने विद्यालय के शिक्षक द्वारा प्राप्त की जा सकती है।'

उपरोक्त काल्पनिक चित्रण द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है कि, व्यवसायिक शिक्षा के लक्षित उद्देश्यों को प्राप्त करने में ब्यूटी पार्लर तथा वेलनेस भी एक अहम भूमिका निभाता है। नई शिक्षा नीति में भीयही बताया गया है कि इस प्रकार हम शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को रोजगार आधारित प्रशिक्षण भी दें, जिसमें उच्चतर माध्यमिक के साथ-साथ माध्यमिक स्तर के बच्चे भी सम्मिलित हों।

शा. कन्या अहिल्या आश्रम क्रमांक 2 पोलो ग्राउंड इंदौर की छात्राएं कार्य आधारित कौशल सीखते हुए।

समेकन

सौंदर्य और वेलनेस क्षेत्र बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी यह एक महत्त्वपूर्ण उद्योग है। यह धीरे-धीरे रोजगार प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। बदलते हुए परिवेश में भारतीय उपभोक्ताओं के रहन-सहन के स्तर में भी बदलाव आया है। सौंदर्य और वेलनेस उद्योग की मांग के साथ कई छोटी-बड़ी कंपनियों ने भी इस उद्योग की ओर रुख कर लिया है अतः प्रशिक्षित ब्यूटी थैरेपिस्ट की मांग बहुत बढ़ गई है। व्यावसायिक शिक्षा में ब्यूटीशियन का पाठ्यक्रम शामिल करके विद्यार्थियों को स्वरोजगार हेतु आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। यह समय की मांग है कि हम इस क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करें। बहु कौशल गतिविधियों से अन्य बातों के साथ-साथ सौंदर्य मूल्य, सहयोग, टीमवर्क कच्चे माल का बेहतर उपयोग आदि को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

- आइए अपने छात्रों को अपने क्षेत्र के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान(आईटीआई) और ब्यूटी एंड वेलनेस सेंटर का भ्रमण कराएं तथा छात्रों के अनुभवों को आपस में साझा करें ।

निम्नलिखित प्रश्नों के योग्य विकल्प बताइए –

प्रश्न 1- व्यावसायिक शिक्षा द्वारा बच्चों में गुणों का विकास होता है -

(अ) नेतृत्व (ब) प्रशिक्षक (स) व्यावसायिक (द) सामाजिक

प्रश्न 2 -व्यावसायिक शिक्षा द्वारा बच्चे बनेंगे -

(अ) सक्रिय (ब) आत्मनिर्भर (स) परिष्कृत (द) उद्यमी

प्रश्न 3 - व्यावसायिक शिक्षा को विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान विषयों से -

(अ) हटाया गया है (ब) जोड़ा गया है (स) संशोधित किया गया है (द) उपरोक्त से कोई नहीं

प्रश्न 4 - भारत में व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत हुई -

(अ) विद्यालय से (ब) घर से (स) गुरुकुल से (द) महाविद्यालय से

प्रश्न 5 - व्यावसायिक शिक्षा विधार्थियों को तकनीकी क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों हेतु अवसर प्रदान करती है -

(अ) सहमत (ब) पूर्णतः सहमत (स) असहमत (द) कोई नहीं

समग्र समेकन

स्वाधीन भारत में नीति निर्माताओं द्वारा महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन 'नई तालीम' को स्वीकार करते हुए बच्चों में बचपन से ही आत्मनिर्भरता व आत्मसम्मान के भाव को विकसित करने पर ज़ोर दिया है। उत्कृष्टता के साथ शिक्षा के लक्ष्य को पाने के लिए तथा देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु माध्यमिक स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा के कौशलों को सिखाने पर हमने इस मॉड्यूल में चर्चा की है। इसमें हस्तकला, खिलौने बनाना तथा ब्यूटीशियन एवं वैलनेस को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त भी अनेक कौशल हैं जो आई.टी.आई. में सिखाए जा रहे हैं, जैसे इलेक्ट्रिशियन, प्लंबिंग, कोडिंग, प्रोग्रामिंग, टेलरिंग, होम डेकोरेशन, गार्डनिंग इत्यादि।

हम जानते हैं कि खिलौनों का संसार अत्यंत विस्तृत है। हमें अपने विद्यालयों में खिलौने बनाने की प्रक्रिया को सम्मिलित कर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर, शिक्षण को प्रभावी बनाकर सिखने सीखने की प्रक्रिया को रोचक व सरल बनाना है। इसी प्रकार हस्तकला भी हमारे देश की प्राचीनतम कलाओं में से एक है, आवश्यकता इस बात की है कि हमारे अध्यापक कितनी कुशलता से विद्यार्थियों के साथ रुचिकर तरीके से खिलौने बनाते हैं, हस्तकला पर आधारित वस्तुओं का निर्माण करते हैं। इसके द्वारा शैक्षिक सिद्धांतों व अवधारणाओं को बच्चों तक पहुचांते है। बच्चे इन कार्यों को सीखते समय गणित, विज्ञान, भाषा, पर्यावरण, संस्कृति, नैतिकता, सृजन आदि को अपने तरीके से रुचि व प्रयोग सहित समझकर आत्मनिर्भर बन सकेंगे। आवश्यकता यह है कि हम अपने बच्चों की रुचि को पहचान कर उसके झुकाव को उचित कौशल से जोड़कर व्यावसायिक प्रशिक्षण की राह तक ले जाएँ।

संदर्भ : –

a. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति

b. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां

c. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

d. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड http://cbse.nic.in

e. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय http://www.skilldevelopment.gov.in

f. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद http://ncert.nic.in

g. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना http://pmkvyofficial.org/

h. मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना तथा मुख्यमंत्री कौशल्या योजना

i. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पुस्तक सिंधु घाटी की कलाएँ

(https://ncert.nic.in/te&tbook/pdf/khfav®w.pdf)

लेखक का नाम

ममता सक्सेना

डाईट बिजलपुर, इंदौर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम

सज्जाद अहमद कुरैशी

मोबाइल- +91-8871427955

उच्च माध्यमिक शिक्षक (लेक्चरर) भौतिक शास्त्र

शासकीय मलक कन्या उमावि, शाजापुर

जिला-शाजापुर

ई मेल- sajjadsrgrsk55@gmail.com

श्री शैलेंद्र आचार्य

शिक्षक

शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल, डिगा व माली, मंदसौर

मोबाइल- +91-9753452233

ई मेल- shailendrasrgrsk93@gmail.com

❑ ❑ ❑